चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	9.3.24	2	3-5

The Tribune

11 recommendations for kharif crop approved at agri workshop

HISAR, MARCH 8

The two-day Agriculture Officers Workshop for Kharif Season 2024 organised at the Agricultural College of the Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) concluded here.

The workshop panelists came up with 11 recommendations— include a variety of Moong MH 1762 and two varieties of fodder sorghum, including CSV 53F, HJ1514 and a hybrid variety of fodder sorghum HJH1513— for the farmers for the kharif season to increase the yield and for protection of crops against diseases.

BR Kamboj with officials at the agriculture workshop. TRIBUNE PHOTO

Vice-Chancellor BR Kamboj was the chief guest while the Haryana Agriculture and Farmers Welfare Department Additional Director Rohtash Raad was the special guest.

Kamboj said to increase the production of quality seeds of advanced varieties, the university is entering into agreements with various government and private sector companies so that the seeds of advanced varieties developed by the university can be made available to farmers. — TNS

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Savera Times	09.03.2024	--	--

Two-day Agriculture Office Workshop concluded at Agriculture college of CSSHAU

@Thesaveratimes
Network

Hisar: The two-day Agriculture Officer Workshop (Kharif) 2024 organized at the Agricultural College of Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University concluded. The workshop was organized to finalize agricultural recommendations to increase the yield of Kharif crops and protect them from diseases. The Vice Chancellor of the University, Prof. was the chief guest in the workshop. B.R. Kamboj, while Additional Director, Agriculture and Farmers Welfare Department, Haryana Dr. Rohtash Raad was present as a special guest in the workshop. Also on the stage, Regional Research Director Dr. Rajbir Garg and Senior Convenor of Krishi Vigyan Kendra, Mahendragarh Dr. Ramesh Yadav played the role of reporter. Chief Guest Prof. B.R. Addressing the workshop, Kamboj said that agriculture officers and extension education experts should send the overall recommendations to the farmers as soon as possible so that crop production can be increased by implementing them in the upcoming Kharif season. He said that to increase the production of quality seeds

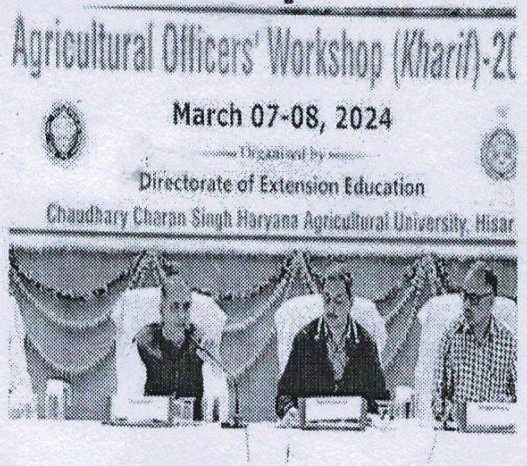

of advanced varieties, the university is entering into agreements with various government and private sector companies so that the seeds of advanced varieties developed by the university can be made available to the farmers as soon as possible. Referring to the problems faced in seed production in crops like jowar and millet, he said that national level seed production companies can also produce seeds of these crops in states with

Improved varieties of Hakrivi are performing well in adverse conditions: Prof. B.R Kamboj

favourable conditions for other crops. Because to deal with the damage caused by birds in these crops, it is necessary to grow these crops in a larger area so that seed production can be increased. He said that in the present time, there is a need to work more on varieties that are tolerant to climate change, give more production in less water and perform well in less fertile land. He also shared with everyone the feedback of the landmark varieties recently developed by the University, including RH 725 variety of mustard, which has shown good performance against diseases and adverse conditions. Additional Director, Agriculture and Farmers Welfare Department, Haryana Dr. Rohtash Raad stressed on running a large-scale awareness campaign about increasing the area under direct sown paddy in the coming Kharif season and not burning crop residues. He gave detailed information about the schemes being run by the concerned department in the interest of farmers. Dr. Sunil Dhanda thanked everyone. The following 11 recommendations on Kharif season crops were approved in the workshop. A variety of Moong M.H. 1762 and two varieties of fodder sorghum, including C.S.V. 53F, H.J.1514 and a hybrid variety of fodder sorghum H.J.H.1513 were included in the overall recommendations for Kharif crops. A. Recommendation of schedule of drip irrigation in cotton crop.0 Recommendation of integrated farming system model for one hectare in the context of climate change. Overall recommendation for growing maize as fodder crop in Kharif season.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	9.3.24	5	1-4

कार्यक्रम • कृषि महाविद्यालय में दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का समापन

हकृवि की उन्नत किस्में विपरीत हालात में भी कर रही अच्छा प्रदर्शन

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का शुक्रवार को समापन हुआ।

कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। कार्यशाला में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज रहे, जबकि अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश राड़ कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। मंच पर क्षेत्रीय अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग एवं कृषि विज्ञान केंद्र, महेंद्रगढ़ के वरिष्ठ संयोजक डॉ. रमेश यादव ने रिपोर्टियर की भूमिका निभाई।

मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यशाला में कहा कि कृषि अधिकारी एवं विस्तार शिक्षा विशेषज्ञ समग्र सिफारिशों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाए ताकि आगामी खरीफ सीजन में उन्हें लागू करवाकर फसल उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकें। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली व कम उपजाऊ भूमि में अच्छा प्रदर्शन करने वाली किस्मों पर और अधिक काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित लैंडमार्क किस्में जिसमें सरसों की आरएच 725 किस्म के बीमारियों व विपरीत परिस्थितियों में अच्छे प्रदर्शन के फीडबैक को भी सभी से साझा किया। अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश राड़ ने आने वाले खरीफ सीजन में सीधी बिजित धान के अंतर्गत क्षेत्रफल बढ़ाने व फसलों के अवशेष न जलाने के बारे में बड़े स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने पर बल दिया। उन्होंने संबंधित विभाग द्वारा किसानों के हित में चलाई जा रही योजनाओं की विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

खरीफ मौसम की फसलों पर 11 सिफारिशें स्वीकृत कीं

- मूंग की एक किस्म एमएच 1762 तथा चारे वाली ज्वार की दो किस्में, जिसमें सीएसवी 53 एफएचजे 1514, चारे वाली ज्वार की एक हाईब्रिड किस्म एचजेएच 1513 को खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों में शामिल।
- कपास की फसल में टपका सिंचाई की समय-सारिणी की सिफारिश, जलवायु परिवर्तन के परिपेक्ष्य में एक हेक्टेयर के लिए समेकित कृषि प्रणाली मॉडल की सिफारिश।
- खरीफ सीजन में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने के लिए समग्र सिफारिश की।
- सीधी बिजित धान में मिश्रित खरपतवार नियंत्रण के लिए पिनोक्सूलम 1% +पेंडिमेथलीन 24 % (पीईपी 25 % एसई) 1000 मिली प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोल बनाकर बिजाई के 0 से 3 दिन बाद नम मिट्टी में छिड़काव करें।
- धान की फसल में फुटाव व उपज बढ़ाने के लिए 4 किलो माइक्रोराइजा (केमैक्स एनर्जी) की तीन बराबर विभाजित खुराक को रोपाई के 15 दिन बाद, फुटाव और बालियां निसरने की अवस्था पर प्रति एकड़ की दर से छींटा विधि से छिड़काव करें।
- धान की सीधी बिजाई में तना छेदक कीट नियंत्रण के लिए 6 मिली (3.75 ग्राम एक्टिव इनग्रेडिएंट) क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल 50 प्रतिशत एफएस (625 ग्राम प्रति लीटर एफएस) (लुमिविआ) को पानी में मिलाकर 25 मिली घोल को प्रति किलो बीज की दर से उपचार करने के बाद छाया में सूखाकर बिजाई करें।
- मक्के की फसल में धारीदार पर्ण एवं पर्णच्छद अंगमारी रोग के नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए 30-35 दिन पुरानी फसल में पौधों की निचली 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	9.3.24	2	3-5

खरीफ फसलों पर 11 सिफारिशें स्वीकृत

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) के दौरान खरीफ फसलों पर 11 सिफारिशें की गईं। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज कार्यशाला में मुख्यातिथि के तौर पर मौजूद रहे। प्रो. काम्बोज ने कहा कि कृषि अधिकारी एवं विस्तार शिक्षा विशेषज्ञ समग्र सिफारिशों को जल्द किसानों तक पहुंचाएं ताकि आगामी खरीफ सीजन में फसल उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सके। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित लैंडमार्क किस्में जिसमें सरसों की आरएच 725 किस्म के बीमारियों व विपरित परिस्थितियों में अच्छे प्रदर्शन के फीडबैक को भी सभी से साझा किया।

मंच पर आसीन हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज सहित अन्य। •पीआरओ

- मूंग की किस्म एमएच 1762 तथा चारे वाली ज्वार की सीएसवी 53 एफ, एचजे 1514 एवं चारे वाली ज्वार की एक हाईब्रिड किस्म एचजेएच 1513 को खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों में शामिल किया गया।
- कपास की फसल में टपका सिंचाई की समय-सारिणी की सिफारिश
- जलवायु परिवर्तन के परिपेक्ष्य में एक हैक्टेयर के लिए समेकित कृषि प्रणाली माडल की सिफारिश
- सीधी बिजित धान में खरपतवार नियंत्रण के लिए पिनोक्सूलम एक प्रतिशत पेंडिमेथलीन 24 प्रतिशत (पीईपीई 25 प्रतिशत एसई) 1000 मिली लीटर प्रति एकड़ की दर से घोल बनाकर बिजाई के 0 से 3 दिन बाद नम मिट्टी में छिड़काव करें।
- धान की फसल में फुटाव व उपज बढ़ाने को चार किलोग्राम माइकोराइजा (केमैक्स एनर्जी) की तीन बराबर विभाजित खुराक को रोपाई के 15 दिन बाद, फुटाव और बालियां निसरने की अवस्था पर प्रति एकड़ की दर से छींटा विधि से छिड़काव करें।
- धान की सीधी बिजाई में तना छेदक कीट नियंत्रण के लिए 6 मिलीलीटर क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल 50 प्रतिशत एफएस को पानी में मिलाकर 25 मिली लीटर घोल को प्रति किलो बीज की दर से उपचार करें।
- मक्के की फसल में धारीदार पर्ण के नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए पौधों की निचली 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	9.3.24	5	5-8

हकृवि की उन्नत किस्में विपरीत परिस्थितियों में भी कर रही अच्छा प्रदर्शन : प्रो. काम्बोज

हिसार, 8 मार्च (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का समापन हुआ। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। कार्यशाला में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश राड़ कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। साथ ही मंच पर क्षेत्रीय अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग एवं कृषि विज्ञान केंद्र, महेंद्रगढ़ के वरिष्ठ संयोजक डॉ. रमेश यादव ने रिपोर्टियर की भूमिका निभाई। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि अधिकारी एवं विस्तार शिक्षा विशेषज्ञ समग्र सिफारिशों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाए ताकि आगामी खरीफ सीजन में उन्हें लागू करवाकर फसल उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकें। उन्होंने कहा कि उन्नत किस्मों के गुणवत्तापूर्ण बीज के उत्पादन को

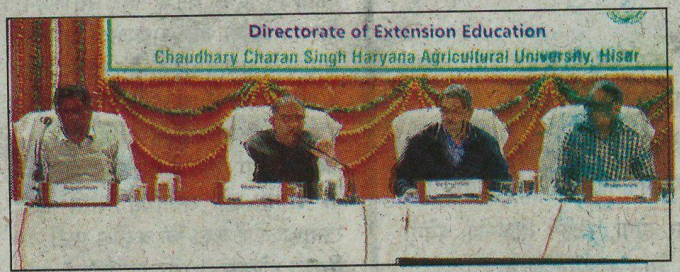

मंच पर आसीन हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य।

बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय विभिन्न सरकारी एवं निजी क्षेत्रों की कंपनियों के साथ समझौते कर रहा है ताकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों का बीज जल्दी से जल्दी किसानों को उपलब्ध करवाया जा सकें। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित लैंडमार्क किस्में जिसमें सरसों की आरएच 725 किस्म के बीमारियों व विपरित परिस्थितियों में अच्छे प्रदर्शन के फीडबैक को भी सभी से सांझा किया। अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश राड़ ने आने वाले खरीफ सीजन में सीधी बिजित धान के अंतर्गत क्षेत्रफल बढ़ाने व फसलों के अवशेष न जलाने के बारे में बड़े स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने पर बल दिया। उन्होंने संबंधित विभाग द्वारा किसानों के हित में चलाई जा रही योजनाओं की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। डॉ. सुनील ढांडा ने सभी का धन्यवाद किया। कार्यशाला में खरीफ मौसम की फसलों पर निम्नलिखित 11 सिफारिशें स्वीकृत की गई। मूंग की एक किस्म एम.एच. 1762 तथा चारे वाली ज्वार की दो किस्में, जिसमें सी.एस.वी. 53 एफ, एच.जे.1514 एवं चारे वाली ज्वार की एक हाईब्रिड किस्म एच.जे.एच.1513 को खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों में शामिल किया गया। कपास की फसल में टपका सिंचाई की समय-सारिणी की सिफारिश। जलवायु परिवर्तन के परिपेक्ष्य में एक हैक्टेयर के लिए समेकित कृषि प्रणाली मॉडल की सिफारिश। खरीफ सीजन में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश। सीधी बिजित धान में मिश्रित खरपतवार नियंत्रण के लिए पिनोक्सूलम 1 प्रतिशत +पेंडिमेथलीन 24 प्रतिशत (पीईपीई 25 प्रतिशत एसई) 1000 मि.ली प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोल बनाकर बिजाई के 0 से 3 दिन बाद नम मिट्टी में छिड़काव करें। धान की फसल में फुटाव व उपज बढ़ाने के लिए 4 किलोग्राम माइकोराइजा (केमैक्स एनर्जी) की तीन बराबर विभाजित खुराक को रोपाई के 15 दिन बाद, फुटाव और बालियां निसरने की अवस्था पर प्रति एकड़ की दर से छींटा विधि से छिड़काव करें। धान की सीधी बिजाई में तना छेदक कीट नियंत्रण के लिए 6 मि.ली. (3.75 ग्राम एक्टिव इनग्रेडिएंट) क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल 50 प्रतिशत एफएस (625 ग्राम प्रति लीटर एफएस) (लुमिविआ) को पानी में मिलाकर 25 मि.ली. घोल को प्रति किलो बीज की दर से उपचार करने के बाद छाया में सूखाकर बिजाई करें। मक्के की फसल में धारीदार पर्ण एवं पर्णच्छद अंगमारी रोग के नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए 30-35 दिन पुरानी फसल में पौधों की निचली 2-3 पत्तियों को तोडने की सिफारिश।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	9.3.24	3	4-8

सेमिनार

एचएयू की मूंग की किस्म एमएच 1762, ज्वार की सीएसवी 53 एफ, एचजे 1514, एचजेएच 1513 को खरीफ के लिए स्वीकृति

कृषि अधिकारी जल्द समग्र सिफारिशें किसानों तक पहुंचाएं

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का समापन हुआ। खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप दिया। इस दौरान एचएयू की मूंग की किस्म एमएच 1762, ज्वार की सीएसवी 53 एफ, एचजे 1514, एचजेएच 1513 समेत 11 फसलों की सिफारिशें की गई। मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि कृषि अधिकारी जल्द समग्र सिफारिशें किसानों तक पहुंचाएं। ताकि आगामी खरीफ सीजन में उन्हें लागू करा सकें।

कुलपति ने कहा कि ज्वार व बाजरा में बीज उत्पादन में आने वाली समस्याओं का जिक्र करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर की बीज उत्पादन कंपनियां इन फसलों का बीज उत्पादन अन्य राज्यों में भी कर सकते हैं। फसलों में पक्षियों के नुकसान से निपटने के लिए बड़े क्षेत्र में उगाना जरूरी है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील,

एचएयू में सेमिनार को संबंधित करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज, साथ हैं अन्य अधिकारी। संवाद

कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली व कम उपजाऊ भूमि में अच्छा प्रदर्शन करने वाली किस्मों पर और अधिक काम करने की आवश्यकता बताई। हाल ही में विकसित सरसों की आरएच 725 किस्म के बीमारियों व विपरीत परिस्थितियों में अच्छे प्रदर्शन के फीडबैक को सभी से साझा किया। इस मौके पर अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश राड़, क्षेत्रीय अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग एवं कृषि विज्ञान केंद्र महेंद्रगढ़ के वरिष्ठ संयोजक डॉ. रमेश यादव मौजूद रहे।

कार्यशाला में खरीफ की फसलों पर सिफारिशें स्वीकृत की गईं

1. मूंग की किस्म एमएच 1762 की सिफारिशें स्वीकृत की गईं
2. चारे वाली ज्वार की सीएसवी 53 एफ की सिफारिशें स्वीकृत की गईं
3. ज्वार की एचजे 1514 की सिफारिशें स्वीकृत की गईं
4. चारे वाली ज्वार की एक हाईब्रिड किस्म एचजेएच 1513 को खरीफ फसल के लिए स्वीकृत किया।
5. कपास की फसल में टपका सिंचाई की समय-सारिणी की सिफारिश।
6. जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में एक हेक्टेयर के लिए समेकित कृषि प्रणाली मॉडल की सिफारिश।
7. खरीफ सीजन में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश।
8. सीधी बिजाई वाले धान में खरपतवार नियंत्रण के लिए पिनोक्सूलम 1 प्रतिशत +पेंडिमेथलीन 24 प्रतिशत,1000 मिली प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोल बनाकर बिजाई के 0 से 3 दिन बाद छिड़काव करें।
9. धान की फसल में फुटाव व उपज बढ़ाने के लिए 4 किलोग्राम माइकोराइजा की तीन बराबर विभाजित खुराक को रोपाई के 15 दिन बाद, फुटाव और बालियों की अवस्था पर प्रति एकड़ की दर से छींटा विधि से छिड़काव करें।
10. धान की सीधी बिजाई में तना छेदक कीट नियंत्रण के लिए 6 मिली, क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल 50 प्रतिशत एफएस को पानी में मिलाकर 25 मिली. घोल को प्रति किलो बीज की दर से उपचार करने के बाद छाया में सुखाकर बिजाई करें।
11. मक्के की फसल में धारीदार पर्ण एवं पर्णच्छद अंगमारी रोग के नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए 30-35 दिन पुरानी फसल में पौधों की निचली 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	9-3-24	12	2-5

दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) का हुआ समापन

एचएयू की उन्नत किस्में विपरीत परिस्थितियों में भी कर रही अच्छा प्रदर्शन : प्रो. काम्बोज

कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

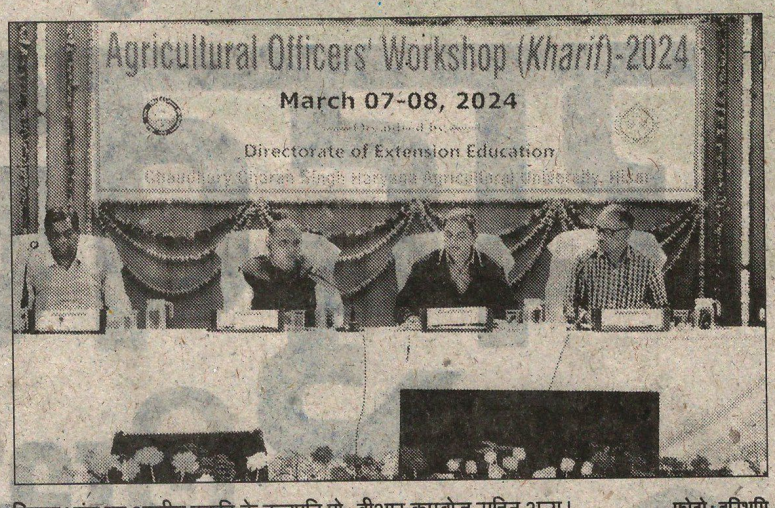

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का समापन शुक्रवार को हुआ। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज रहे, जबकि कृषि व किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. रोहताश राड कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। साथ ही मंच पर क्षेत्रीय अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग एवं कृषि विज्ञान केंद्र, महेंद्रगढ़ के वरिष्ठ संयोजक डॉ. रमेश यादव ने रिपोर्टियर की भूमिका निभाई।

मुख्य अतिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि अधिकारी एवं विस्तार शिक्षा विशेषज्ञ समग्र सिफारिशों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाए ताकि आगामी खरीफ सीजन में उन्हें लागू करवाकर फसल उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सकें। उन्होंने ज्वार व बाजरा जैसे फसलों में बीज उत्पादन में आने वाली समस्याओं का जिक्र करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर की बीज उत्पादन कंपनियां इन फसलों का बीज उत्पादन अन्य फसल के अनुकूल परिस्थितियों वाले राज्यों में भी कर सकते हैं, क्योंकि इन फसलों में पक्षियों द्वारा किए गए नुकसान से निपटने के लिए बड़े क्षेत्र में इन फसलों को उगाना जरूरी होता है ताकि बीज उत्पादन बढ़ाया जा सकें। विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित लैंडमार्क किस्में जिसमें सरसों की आरएच 725 किस्म के बीमारियों व विपरीत परिस्थितियों में अच्छे प्रदर्शन के फीडबैक को भी सभी से साझा किया। कृषि व किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. रोहताश राहड़ ने आने वाले खरीफ सीजन में सीधी बिजित धान के अंतर्गत क्षेत्रफल बढ़ाने व फसलों के अवशेष न जलाने के बारे में बड़े स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने पर बल दिया। डॉ. सुनील ढांडा ने सभी का धन्यवाद किया।

हिसार। मंच पर आसीन हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज सहित अन्य। फोटो : हरिभूमि

कार्यशाला में खरीफ मौसम की फसलों पर 11 सिफारिशें स्वीकृत

- मूंग की एक किस्म एम.एच. 1762 तथा चारे वाली ज्वार की दो किस्में, जिसमें सीएसवी 53 एफ, एचजे 1514 एवं चारे वाली ज्वार की एक हाईब्रिड किस्म एचजेएच 1513 को खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों में शामिल किया गया
- कपास की फसल में टपका सिंचाई की समय-सारिणी की सिफारिश, खरीफ सीजन में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने के लिए समग्र सिफारिश
- धान की फसल में फुटाव व उपज बढ़ाने के लिए 4 किलोग्राम माइकोराइजा (केमैक्स एनर्जी) की तीन बराबर विभाजित खुराक को रोपाई के 15 दिन बाद, फुटाव और बालियां निसरने की अवस्था पर प्रति एकड़ की दर से छींटा विधि से छिडकाव करें
- धान की सीधी बिजाई में तना छेदक कीट नियंत्रण के लिए 6 मिली (3.75 ग्राम एक्टिव इनग्रेडिएंट) क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल 50 प्रतिशत एफएस (625 ग्राम प्रति लीटर एफएस) (लुमिविआ) को पानी में मिलाकर 25 मिली घोल को प्रति किलो बीज की दर से उपचार करने के बाद छाया में सूखाकर बिजाई करें
- मक्के की फसल में धारीदार पर्ण एवं पर्णच्छद अंगमारी रोग के नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए 30-35 दिन पुरानी फसल में पौधों की निचली 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	9.3.24	4	1-4

कार्यशाला में खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने व बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को दिया अंतिम रूप

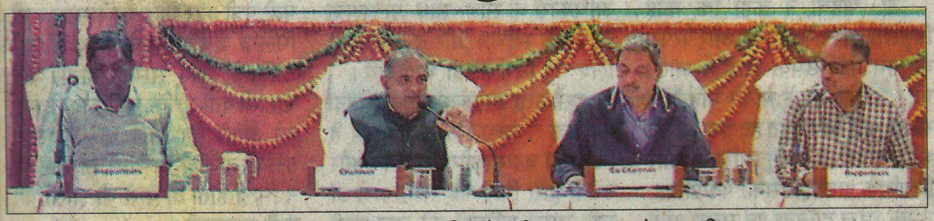

मंच पर आसीन हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज सहित अन्य।

- **दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का हुआ समापन**
- **हकृवि की उन्नत किस्में विपरित परिस्थितियों में भी कर रही अच्छा प्रदर्शन : प्रो. काम्बोज**

हिसार, 8 मार्च (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का समापन हुआ। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। कार्यशाला में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डा. रोहताश राड़ कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि अधिकारी एवं विस्तार शिक्षा विशेषज्ञ समग्र सिफारिशों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाए ताकि आगामी खरीफ सीजन में उन्हें लागू करवाकर फसल उत्पादन में बढ़ौतरी की जा सकें।

उन्होंने कहा कि उन्नत किस्मों के गुणवत्तापूर्ण बीज के उत्पादन को बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय विभिन्न सरकारी एवं निजी क्षेत्रों की कंपनियों के साथ समझौते कर रहा है ताकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों का बीज जल्दी से जल्दी किसानों को उपलब्ध करवाया जा सके।

उन्होंने ज्वार व बाजरा जैसे फसलों में बीज उत्पादन में आने वाली समस्याओं का जिक्र करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर की बीज उत्पादन कंपनियां इन फसलों का बीज उत्पादन अन्य फसल के अनुकूल परिस्थितियों वाले राज्यों में भी कर सकते हैं क्योंकि इन फसलों में पक्षियों द्वारा किए गए नुक्सान से निपटने के लिए बड़े क्षेत्र में इन फसलों को उगाना जरूरी होता है ताकि बीज उत्पादन बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली व कम उपजाऊ भूमि में अच्छा प्रदर्शन करने वाली किस्मों पर और अधिक काम करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित लैंडमार्क किस्में जिसमें सरसों की आर.एच. 725 किस्म के बीमारियों व विपरित परिस्थितियों में अच्छे प्रदर्शन के फीडबैक को भी सभी से साझा किया।

अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डा. रोहताश राड़ ने आने वाले खरीफ सीजन में सीधी बिजित धान के अंतर्गत क्षेत्रफल बढ़ाने व फसलों के अवशेष न जलाने के बारे में बड़े स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने पर बल दिया। उन्होंने संबंधित विभाग द्वारा किसानों के हित में चलाई जा रही योजनाओं की विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

कार्यशाला में खरीफ मौसम की फसलों पर 11 सिफारिशें स्वीकृत की गईं

- मूंग की एक किस्म एम.एच. 1762 तथा चारे वाली ज्वार की दो किस्में, जिसमें सी.एस.वी. 53 एफ, एच.जे.1514 एवं चारे वाली ज्वार की एक हाईब्रिड किस्म एच.जे.एच.1513 को खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों में शामिल किया गया।
- कपास की फसल में टपका सिंचाई की समय-सारिणी की सिफारिश।
- जलवायु परिवर्तन के परिपेक्ष्य में एक हैक्टेयर के लिए समेकित कृषि प्रणाली मॉडल की सिफारिश।
- खरीफ सीजन में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश।
- सीधी बिजित धान में मिश्रित खरपतवार नियंत्रण के लिए पिनोक्सूलम 1 प्रतिशत प्लस पेंडिमेथलीन 24 प्रतिशत (पी.ई.पी.ई. 25 प्रतिशत एसई) 1000 मि.ली प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोल बनाकर बिजाई के 0 से 3 दिन बाद नम मिट्टी में छिड़काव करें।
- धान की फसल में फुटाव व उपज बढ़ाने के लिए 4 किलोग्राम माइकोराइजा (केमैक्स एनर्जी) की तीन बराबर विभाजित खुराक को रोपाई के 15 दिन बाद, फुटाव और बालियां निसरने की अवस्था पर प्रति एकड़ की दर से छींटा विधि से छिड़काव करें।
- धान की सीधी बिजाई में तना छेदक कीट नियंत्रण के लिए 6 मि.ली. (3.75 ग्राम एक्टिव इनग्रेडिएंट) क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल 50 प्रतिशत एफ.एस. (625 ग्राम प्रति लीटर एफ.एस.) (लुमिविआ) को पानी में मिलाकर 25 मि.ली. घोल को प्रति किलो बीज की दर से उपचार करने के बाद छाया में सूखाकर बिजाई करें।
- मक्के की फसल में धारीदार पर्ण व पर्णच्छद अंगमारी रोग के नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए 30-35 दिन पुरानी फसल में पौधों की निचली 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाईम्स न्यूज	08.03.2024	--	--

हकृवि की उन्नत किस्में विपरित परिस्थितियों में भी कर रही अच्छा प्रदर्शन : प्रो. बी.आर काम्बोज

दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) का हुआ समापन

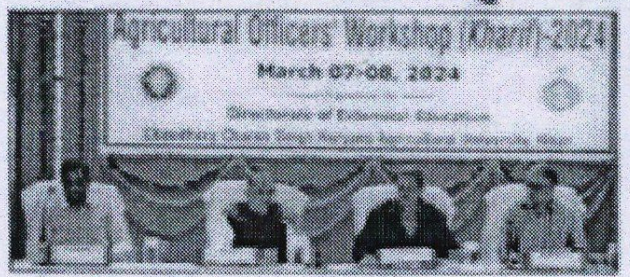

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का समापन हुआ। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। कार्यशाला में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश राठ कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। साथ ही मंच पर क्षेत्रीय अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग एवं कृषि विज्ञान केंद्र, महेंद्रगढ़ के वरिष्ठ संयोजक डॉ. रमेश यादव ने रिपोर्टियर की भूमिका निभाई।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि अधिकारी एवं विस्तार शिक्षा विशेषज्ञ समस्त सिफारिशों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाएं, ताकि आगामी खरीफ सीजन में उन्हें लागू करवाकर फसल उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सके। उन्होंने कहा कि उन्नत किस्मों के गुणवत्तापूर्ण बीज के उत्पादन को बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय विभिन्न सरकारी एवं निजी क्षेत्रों की कंपनियों के साथ समझौते कर रहा है ताकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों का बीज जल्दी से जल्दी किसानों को उपलब्ध करवाया जा सके। उन्होंने ज्वार व बाजरा जैसे फसलों में बीज उत्पादन में आने वाली समस्याओं का जिक्र करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर की बीज उत्पादन कंपनियां इन फसलों का बीज उत्पादन अन्य फसल के अनुकूल परिस्थितियों वाले राज्यों में भी कर सकते हैं। क्योंकि इन फसलों में पक्षियों द्वारा किए गए नुकसान से निपटने के लिए बड़े क्षेत्र में इन फसलों को उगाना जरूरी होता है ताकि बीज उत्पादन बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली व कम उपजाऊ भूमि में अच्छा प्रदर्शन करने वाली किस्मों पर और अधिक काम करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित [illegible] किस्में जिसमें सरसों की आरएच 725 किस्म के बीमारियों व विपरित परिस्थितियों में अच्छे प्रदर्शन के फीडबैक को भी सभी से साझा किया।

अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश राठ ने आने वाले खरीफ सीजन में सीधी बिजाई धान के अंतर्गत क्षेत्रफल बढ़ाने व फसलों के अवशेष न जलाने के बारे में बड़े स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने पर बल दिया। उन्होंने संबंधित विभाग द्वारा किसानों के हित में चलाई जा रही योजनाओं की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। डॉ. सुनील ढांडा ने सभी का धन्यवाद किया।

कार्यशाला में खरीफ मौसम की फसलों पर निम्नलिखित 11 सिफारिशें स्वीकृत की गई। मूंग की एक किस्म एम.एच. 1762 तथा चारे वाली ज्वार की दो किस्में, जिसमें सी.एस.वी. 53 एफ, एच.जे.1514 एवं चारे वाली ज्वार की एक हाईब्रिड किस्म एच.जे.एच.1513 को खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों में शामिल किया गया।

मक्के की फसल में धारीदार पर्ण एवं पर्णच्छद अंगमारी रोग के नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए 30-35 दिन पुरानी फसल में पौधों की निचली 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	08.03.2024	--	--

सभी बाधाओं के बावजूद महिलाओं ने अपनी प्रतिभा को साबित किया है : संतोष कुमारी

पांच बजे न्यूज

हिसार। सभी बाधाओं के बावजूद महिलाओं ने अपनी प्रतिभा का प्रमाण दिया है। महिलाओं के उद्यमी और प्रगतिशील स्वभाव के कारण वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पूरी मेहनत और प्रयास कर रही है। महिलाओं ने अपनी क्षमताओं का सबूत दिया है। ऐसे कार्यक्रम ग्रामीण महिलाओं के ज्ञान, कौशल, जागरूकता, निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास में परिवर्तन लाने के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। सरकार की विभिन्न योजनाओं और पहलों के फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति में सुधार देखा जा रहा है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कैंपस स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी ने कहे। वे गांव धांसू में इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा आयोजित ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव कार्यक्रम के समापन पर बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रही थी।

इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव ने बताया कि इस मासिक कार्यक्रम में प्रत्येक छात्रा ने कम से कम तीन परिवारों में व्याख्यान, प्रदर्शनी, रैली, समूह चर्चा आदि जैसे विस्तार तरीकों का उपयोग करके भोजन पोषण, संसाधन प्रबंधन, अपशिष्ट प्रबंधन, कपड़े निर्माण और अलंकरण, बच्चों की देखभाल, गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं से आह्वान किया कि अब समय बदल गया है कि उन्हें न केवल किसी भी कार्यक्रम में लाभार्थी के रूप में भाग लेना चाहिए, बल्कि योजना और कार्यान्वयन में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। कार्यक्रम में पौष्टिक व्यंजन, बाजरा के उत्पाद, वस्त्र की कढ़ाई अध्यापन सामग्री सहित गांव की पारंपरिक वस्तुओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसका मुख्यातिथि ने अवलोकन किया। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट योगदान देने वाली महिलाओं को मुख्यातिथि ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर सरपंच प्रतिनिधि सुरजीत सिंह, स्कूल प्राचार्य मोहनलाल बैनीवाल, भारी संख्या में महिलाएं, जिला परिषद, पशु चिकित्सालय, ब्लॉक समिति एवं ग्राम पंचायत के सदस्य, युवा संगठन, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के ग्राम स्तरीय अधिकारी, महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाएं, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहित अन्य शामिल हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	08.03.2024	--	--

दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) का हुआ समापन

हकृवि की उन्नत किस्में विपरित परिस्थितियों में भी कर रही अच्छा प्रदर्शन : प्रो. काम्बोज

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का समापन हुआ। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। कार्यशाला में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश [illegible] कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। साथ ही मंच पर क्षेत्रीय अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग एवं कृषि विज्ञान केंद्र, महेंद्रगढ़ के वरिष्ठ संयोजक डॉ. रमेश यादव ने रिपोर्टियर की भूमिका निभाई।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि अधिकारी एवं जिलास्तर विषय विशेषज्ञ समस्त सिफारिशों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाएं ताकि आगामी खरीफ सीजन में उन्हें लागू करवाकर फसल उत्पादन में बढ़ोतरी की जा सके।

उन्होंने कहा कि उन्नत किस्मों के गुणवत्तापूर्ण बीज के उत्पादन को बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय विभिन्न सरकारी एवं निजी क्षेत्रों की कंपनियों के साथ साझेदारी कर रहा है ताकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों का बीज जल्दी से जल्दी किसानों को उपलब्ध करवाया जा सके। उन्होंने ज्वार व बाजरा जैसी फसलों में बीज उत्पादन में आने वाली समस्याओं का जिक्र करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर की बीज उत्पादन कंपनियां इन फसलों का बीज उत्पादन अन्य फसल के अनुकूल परिस्थितियों वाले राज्यों में भी कर सकती है। क्योंकि इन फसलों में पक्षियों द्वारा किए गए नुकसान से निपटने के लिए बड़े क्षेत्र में इन फसलों को लगाना जरूरी होता है ताकि बीज उत्पादन बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली व कम उपजाऊ भूमि में अच्छा प्रदर्शन करने वाली किस्मों पर और अधिक काम करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित तिलहनी किस्मों जिसमें सरसों की आरएच 725 किस्म के बीमारियों व विपरीत परिस्थितियों में अच्छे प्रदर्शन के फीडबैक को भी सभी से साझा किया।

अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश [illegible] ने आने वाले खरीफ सीजन में सीधी बिजाई धान के अंतर्गत क्षेत्रफल बढ़ाने व फसलों के अवशेष न जलाने के बारे में बड़े स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने पर बल दिया। उन्होंने संबंधित विभाग द्वारा किसानों के हित में चलाई जा रही योजनाओं की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। डॉ. सुशील ढांडा ने सभी का धन्यवाद किया।

कार्यशाला में खरीफ मौसम की फसलों पर निम्नलिखित 11 सिफारिशें स्वीकृत की गई

- मूंग की एक किस्म एमएच 1762 तथा चारे वाली ज्वार की दो किस्में, जिसमें सी.एस.वी. 53 एफ, एच.जे.1514 एवं चारे वाली ज्वार की एक हाईब्रिड किस्म एच.जे.एच.1513 को खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों में शामिल किया गया।
- कपास की फसल में टपका सिंचाई की समय-सारिणी की सिफारिश
- जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में एक हेक्टेयर के लिए समेकित कृषि प्रणाली मॉडल की सिफारिश
- खरीफ सीजन में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश
- सीधी बिजाई धान में मिश्रित खरपतवार नियंत्रण के लिए पिनोक्सुलम 1 प्रतिशत + पेंडिमेथालिन 24 प्रतिशत (पीईसी 25 प्रतिशत एसई) 1000 मि.ली. प्रति एकड़ की दर से 100 लीटर पानी में घोल बनाकर बिजाई के 0 से 3 दिन बाद नम मिट्टी में छिड़काव करें।
- धान की फसल में फुटाव व उपज बढ़ाने के लिए 4 किलोग्राम [illegible] ([illegible]) की तीन बराबर [illegible] को रोपाई के 15 दिन बाद, फुटाव और बालियां निकलने की अवस्था पर प्रति एकड़ की दर से छींटा विधि से छिड़काव करें।
- धान की सीधी बिजाई में तना छेदक कीट नियंत्रण के लिए 6 मि.ली. (3.75 ग्राम एक्टिव इंग्रीडिएंट) क्लोरेन्ट्रानिलिप्रोल 50 प्रतिशत एफएस (625 ग्राम प्रति लीटर एफएस) (लुमिविया) को पानी में मिलाकर 25 मि.ली. घोल को प्रति किलो बीज की दर से उपचार करने के बाद छाया में सुखाकर बिजाई करें।
- मक्के की फसल में धारीदार पत्ती एवं पर्णच्छद अंगमारी रोग के नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए 30-35 दिन पुरानी फसल से पौधों की निचली 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाईम्स न्यूज	08.03.2024	--	--

सभी बाधाओं के बावजूद महिलाओं ने अपनी प्रतिभा को साबित किया है : श्रीमती संतोष कुमारी

हकृवि द्वारा ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव का समापन समारोह आयोजित

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। सभी बाधाओं के बावजूद महिलाओं ने अपनी प्रतिभा का प्रमाण दिया है। महिलाओं के उद्यमी और प्रगतिशील स्वभाव के कारण वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पूरी मेहनत और प्रयास कर रही है। महिलाओं ने अपनी क्षमताओं का सबूत दिया है। ऐसे कार्यक्रम ग्रामीण महिलाओं के ज्ञान, कौशल, जागरूकता, निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास में परिवर्तन लाने के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। सरकार की विभिन्न योजनाओं और पहलों के फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति में सुधार देखा जा रहा है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कैंपस स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी ने कहे। वे गांव धांसू में इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा आयोजित ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव कार्यक्रम के समापन पर बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रही थी।

इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव ने बताया कि इस मासिक कार्यक्रम में प्रत्येक छात्रा ने कम से कम तीन परिवारों में व्याख्यान, प्रदर्शनी, रैली, समूह चर्चा आदि जैसे विस्तार तरीकों का उपयोग करके भोजन पोषण, संसाधन प्रबंधन, अपशिष्ट प्रबंधन, कपड़े निर्माण और अलंकरण, बच्चों की देखभाल, गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं से आह्वान किया कि अब समय बदल गया है कि उन्हें न केवल किसी भी कार्यक्रम में लाभार्थी के रूप में भाग लेना चाहिए, बल्कि योजना और कार्यान्वयन में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। कार्यक्रम में पौष्टिक व्यंजन, बाजरा के उत्पाद, वस्त्र की कढ़ाई अध्यापन सामग्री सहित गांव की पारंपरिक वस्तुओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसका मुख्यातिथि ने अवलोकन किया।

कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट योगदान देने वाली महिलाओं को मुख्यातिथि ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर सरपंच प्रतिनिधि सुरजीत सिंह, स्कूल प्राचार्य मोहनलाल बैनीवाल, भारी संख्या में महिलाएं, जिला परिषद, पशु चिकित्सालय, ब्लॉक समिति एवं ग्राम पंचायत के सदस्य, युवा संगठन, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के ग्राम स्तरीय अधिकारी, महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाएं, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सहित अन्य शामिल हुए।